

श्री महागणपतये नमः अथ महागणपति
 पद्यतिः तदा हो प्रातः कस्य साधकवर्थेनामे
 मुकुते चोत्था गणपतप्रसन्नं नमुवप्रशा लनं वक्र
 त्वा न स्तोत्रारं सपाद्य शत्रिवा संतत्का ल्या धो
 ते वा ससा परिधा य स्वासने दुषयि श्य अह रं धे स्त
 श्री गुरुं संनि स्यात् तत्क रमाह प्रस रं धा स्त स्त
 सत्सु ह लक म लक म लक रियं को यां शि हा सने
 समुप वि शं वा मी क ल या हे व्या र क व स्त्रा भर या
 मा स्या नु ले प भू यि त या लो न करे ध त र लो वा लो न
 म ल या यि ति या भु जो भा ति जि सं ॥ श्वे तु व श्या भू या
 मा स्या नु ले प भू यि तं मु क्त हा मा दि वि भू यि तं वं
 इ कां ति नि सं जि ने त्रं ज्ञान मु द्रा मु क्त क व रा भ थ क

रं शांते सुप्रसन्नं शिवरुपिणं श्रीगुरुं ध्यात्वा त
 स्मरणात् शिवं दृष्टुं लविगतिं न ज्ञानतथा
 शक्तिः स्वहृत्पारमुत्तं विज्ञात्वा ॥ श्वेतं श्वेत
 विलेपमात्मवसनं नाम नरकोसलं लिङ्गः सा
 प्रिययेत्यसरेण चरसास्त्रिष्टं प्रसन्नाननं
 सस्नाभ्यामजयवरं च दृष्टं तं शंभुं स्वरूपं परं
 साक्षात् लोहितलोचनोत्पलजुगंध्याये चिर
 म्भृगुरुं ॥१॥ श्रीनाशादिचतुष्टयंगणपतिपी
 ठत्रयं नैरवंशि द्वे ज्योत्सुके कत्रयं परदृष्टुं
 उत्तिरंभं शांभवं वीरं भाष्टवत्तुश्च यज्ञान
 वंकां वीरावलीपंचकं श्रीमन्मात्रिनिमंत्ररा
 जसप्तितं वं हेतुरोर्मंडलं ॥२॥ गुरुर्विभाशु

॥१॥

॥१॥

महादेवी चंद्रघंटा माला ॥ सावित्री मंत्र गायत्री मंत्र
 एतौ ब्रह्म वाहिनी ॥ २ ॥ नारायण मंत्र काशी रंजनी कर्मणि
 ला ॥ अग्नि ज्योतिष ५ मुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥ ४ ॥ मे
 घस्वनासफलाही वि क र्थे गी शशे र ॥ मतो हरी मुत्ते के
 र शीथो र्त्तप मत्त बलो अमुता नर जाने शरो जहं त्री शी
 वप्रया ॥ शिव दुती वीराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ॥ ५ ॥ म
 त्रिधा सुरतं त्री व चा मुजा मत्त मातृका ॥ ६ ॥ श्रीरंद्र रूप
 चंद्रशक्तिः परमया ॥ ६ ॥ वाराहिनार सिंही च भीमा
 नैरवनाहिनी ॥ मुक्तिः सृति धर्ति मेधा विद्या लक्ष्मी
 सरस्वती ७ ॥ अने ता विजया प्रया मान स्तोका परा
 जिता ॥ नवामि पर्वति दुर्गा हिमवत्सं वि काशी वापत ॥
 तैनेन मपदे देवी लुता शकै र्थधीमता ॥ अयु रोग्य
 मेश्वर्यं शाने वि तं मत्त बलो ॥ २ ॥ शतमावर्तयेत्तु मु

११२५

अतएवाधिबेधमात्रे ॥ आवर्तनसकस्येरासतनेवा
 सिफलें ॥ १० ॥ नाभिमात्रे जले स्थित्वी सप्तस्वपरिसंख्या
 या ॥ जपे स्तोत्रं मिहं तस्य वांछी सिधिर्न वेधवंप्र ॥ ११ ॥
 अपनेनाविधिना नन्या मंत्रसिधिः प्रजापते ॥ प्राज्ञ
 को लेपटे तस्य वरणासा सिधिरुच्यते ॥ १२ ॥ संवत्सर
 तुपासितसर्वकार्यसिधियो संतुष्ट च न वेदेवी प्र
 त्पशा सात्रि जायते ॥ १३ ॥ इन्द्राही स्तोत्रं संसर्गं शुभं व
 तु काला रा अतु लखितं अथ रू र्णा नै ह रा म

११२५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
 समवेता युयुत्सवः
 मामकाः पाण्डवाश्चैव
 तस्यैवमकाश्विनः ॥
 १ ॥



२

के सं

श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरुभ्यो नमः प्रबानि स... त्वी
 प्रभवति चतुर्भिर्नवद्वैः प्रजानामीशानशिल्प...
 पंचत्रिंशत्पि॥ नवद्विंशत्सिनानीर्दशशतमुश्चैरप...
 निस्तदात्मेयंकेष्वकथमस्मिन्तवसरः...
 द्वाष्टोमधुमधुरिताकैरपिपदैर्विशिख्यानाख्ये
 योभवति... सनामात्रविषयः॥ तथातेसौदृश्ये
 परमशिवइत्या... त्रविषयःकथंकारंक्रमः
 सकलनिगमागोचरशुभो॥२॥ मुखान्तस्तांजल
 नयनयुगलेकज्जिलकला ललाटेकाशमीरंवि

श

५५
६

लसक्ति गले मौक्ति के लता ॥ सु ० रत्नो ची शशीप
 पु करि तरे ला टके मयी जना प्र स्तो गोरी मगपमि कि
 शोरी म वि रता ॥ भा वि र ज न सं दार दु प्र कु र म स र सु
 नत टी न टा डी ए ना इ प्र म ह वि चेल कु ड ले ग ह प
 न तो गो ना तं गी रु चि र ग ति नं गी ज ग व ता म ति
 शं जो रं जो रु रु च व टु ल व रु वि ज य ते ॥ न वी ना र्
 न्न ज न्न सि क न क भे षा प रि करैः न्ना तां गी सु
 गी रु चि र न य नां गी क न शि वा त डि पी तां
 लु छि त मं जी र शु भौ गा मु प्रा प र्णा ह र्क नि
 य सु खै र सु सु सु र्वी ॥ ५ ॥ कि मा द्रौ शं भे ता सु

क

५५
६

पात

५२॥

ततं करैः पञ्च वयुना सपुष्पा मुक्ताजिर्जो मरु कलि
 चालक मरु ॥ कृतस्था रा स्या रा कुच फलनता मु
 रसा रुजा सं ग्री ग्री विलसन्नि दानं इ लतिको ॥ १६ ॥
 ही मा की ली कनि पय गु लैः सा दर सि फ म्र ये त्प मे
 म म तु म ति रे व विल स ति अ प र्णै का ले या ज ग ती ल का
 प त्रि व तः पु श लो पि स्या रा प्र ल ति कि ल कै व ल्य प र्णै ॥ १७ ॥
 वि भा त्री ध र्मा शौ ल्व म शि श क ला न्ना य ज न नी ल्व म र्णै
 मां श लं ध न र्म म नी मां शि श क लै ल्व मा दिः का मा न
 ज ग ति न तं क र्ण वि ज ये स तां मु क्ते वी जै म् शि प
 र न स म्प ति च्छि ॥ १८ ॥ कृ त्ना मु क्ति स्ते पा र्पि न म्प ना लो
 ल म न सः त्व या तु श्री भु ग व त्या मु र्खे य म्ब लो न पो प

५३